3. **नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को पूरा कीजिए–**

बहुत भूख से .....,

भटक रही थी .....।

गाँव-गाँव में .....,

..... न ढूँढ पाई, हारी।

अचानक उसने देखा .....,

पर वह भी बिलकुल .....।

..... खाकर भूख .....,

..... से वह फूली न .....।

गली-गली में
भोजन
रोटी का टुकड़ा
इधर-उधर
रूखा-सूखा
बेचैन थी वह,
उसे ही, मिटाई
खुशी, समाई

पानी कहाँ-कहाँ?

1. **हमें पानी अनेक स्रोतों से मिलता है। जिन स्रोतों से हमें पानी मिलता है, उन पर सही (✓) का निशान लगाइए–**

☐

☐

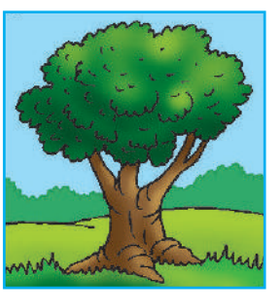

☐

☐

2. शब्द-जाल में जल (पानी) स्रोतों को ढूँढकर लिखिए–

ब	र	सा	त	×	कु
न	ल	ग	×	झी	आँ
×	झ	र	ना	ल	×
ता	ला	ब	×	न	दी

(क) ..... (ख) .....

(ग) ..... (घ) .....

(ङ) ..... (च) .....

(छ) ..... (ज) .....

जीवन मूल्य

कौवा पानी के लिए इधर-उधर भटका और कोशिश करके वह अपनी प्यास बुझा सका।

- क्या आप भी समस्याएँ आने पर उनका हल ढूँढ सकते हैं?
- आप कौवे की सहायता किस प्रकार करते?

कुछ करने के लिए

एक गिलास पानी लीजिए, उसमें चुटकी-भर नमक और दो चम्मच चीनी घोल लें। जब उसमें चीनी-नमक अच्छी तरह से घुल जाए तब उसमें आधा कटा हुआ नींबू निचोड़ दें। उसे ठंडा करने के लिए दो-तीन टुकड़े बर्फ़ के डालें और पीकर आनंद ले।

3 हाथी और चिड़िया

एक हाथी और एक चिड़िया में झगड़ा हो गया। हुआ यूँ कि एक दिन चिड़िया अपने लिए एक नया घोंसला बना रही थी। यहाँ-वहाँ से तिनका इकट्ठे कर रही थी। एक बार में वह एक ही तिनका उठा पाती थी। वह तिनका पकड़ती, उड़ती और पेड़ की डाली पर रख आती। उसे बार-बार यह करते देख हाथी को हँसी आ गई। वह चिड़िया पर हँसता हुआ बोला-''बेचारी, इतनी छोटी, इतनी कमज़ोर है कि एक से

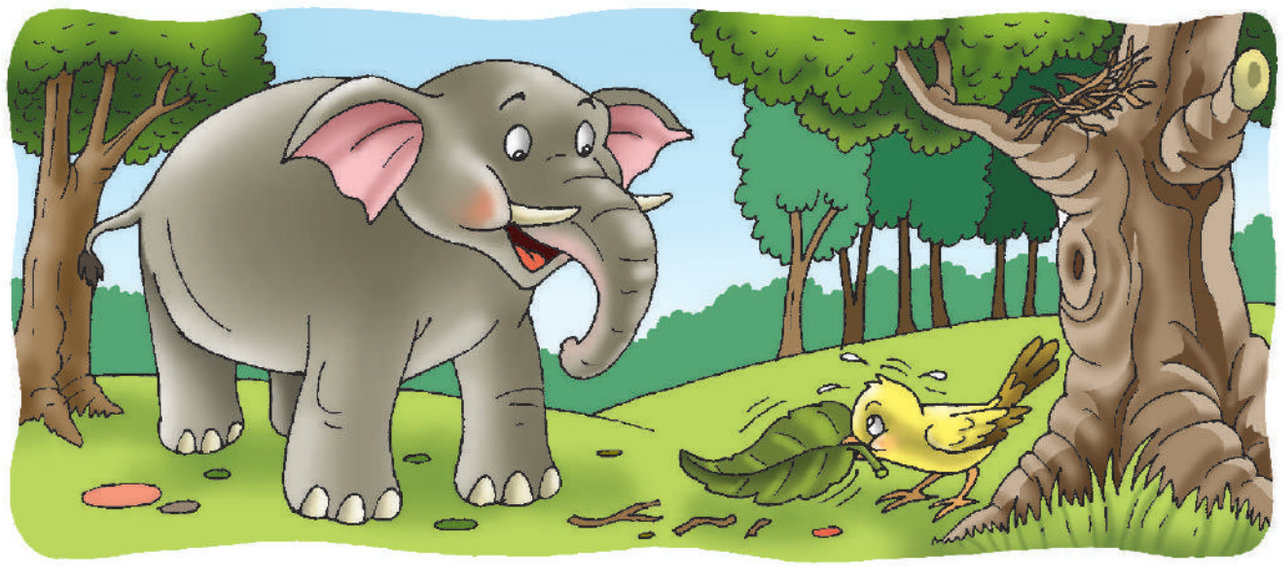

ज़्यादा तिनका उठा ही नहीं पाती। मुझे यदि ऐसे तिनके उठाने पड़ें तो मैं हज़ारों-लाखों तिनके एक बार में उठा सकता हूँ।'' घोंसला बनाने के लिए चिड़िया ने धरती पर गिरा पत्ता उठाना चाहा। पत्ता कुछ बड़ा था। उससे उठ ही नहीं रहा था। बार-बार उसके मुँह से पत्ता ज़मीन पर गिर जाता। यह देखकर तो हाथी को खूब हँसी आई। हँसते-हँसते बोला– ''कुदरत ने तुम्हें बनाने में खूब कंजूसी दिखाई है। एक पत्ता तक तुमसे नहीं उठता है। मैं चाहूँ तो इस पूरे पेड़ को उखाड़कर उठा सकता हूँ। क्या तुम ऐसा कर सकती हो?''

''मैं ऐसा क्यों करूँगी? यदि पेड़ को उखाड़ा जाए तो उस पर रहने वाले कितने ही पक्षियों के घर **उजड़** जाएँगे। एक पेड़ को बनने में कम-से-कम दस वर्ष लग जाते हैं।'' हाथी को गुस्सा आ गया। वह बोला– ''चिड़िया की बच्ची, तुम बहुत ज़्यादा चीं-चीं करती हो। तुमने तिनके और पत्ता उठाकर मेरे सामने अपनी ताकत दिखाई है। मैं भी अपनी ताकत दिखाऊँगा।''

शब्दार्थ: उजड़ जाना-खराब होना, नष्ट होना

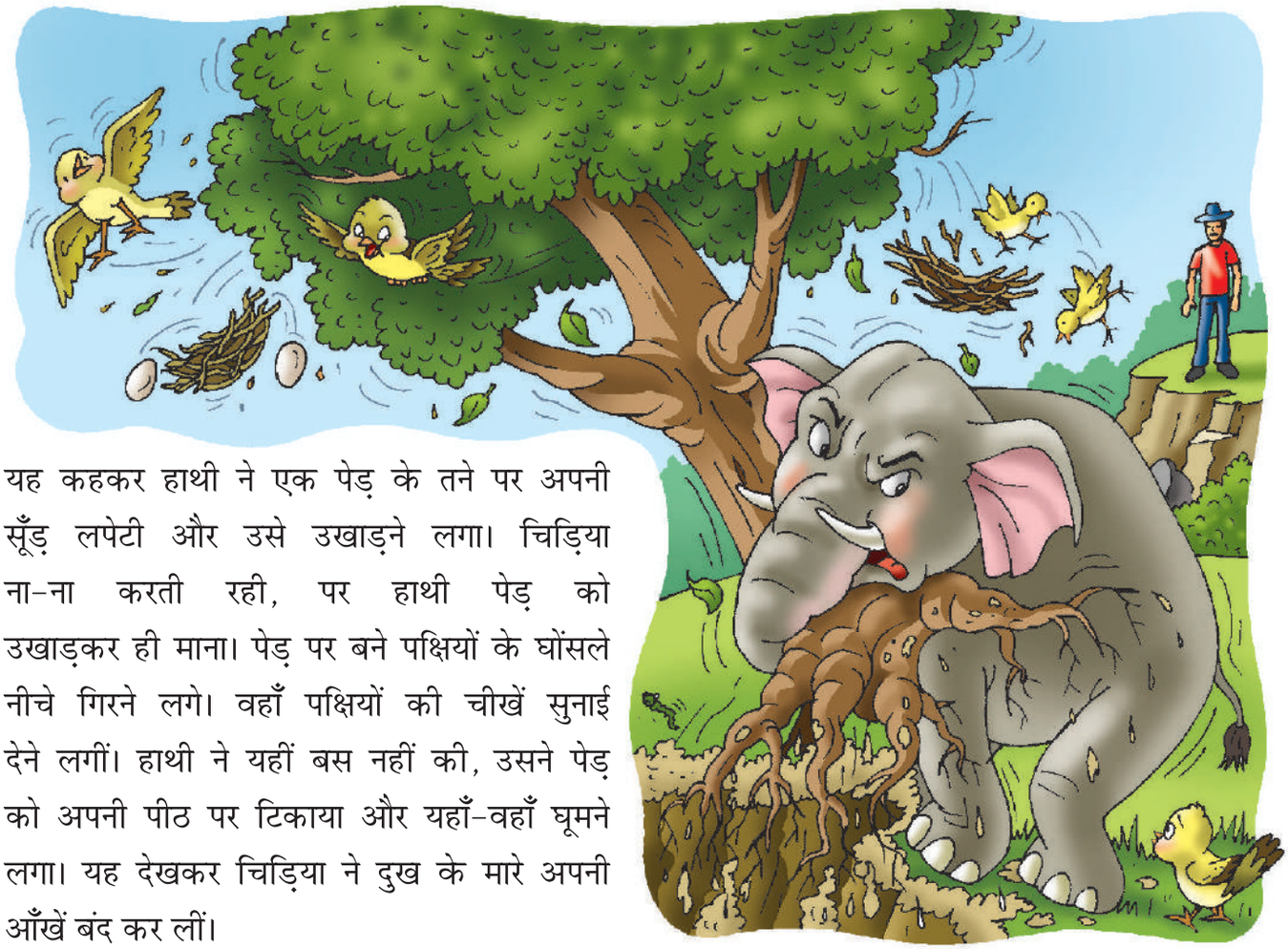

यह कहकर हाथी ने एक पेड़ के तने पर अपनी सूँड़ लपेटी और उसे उखाड़ने लगा। चिड़िया ना-ना करती रही, पर हाथी पेड़ को उखाड़कर ही माना। पेड़ पर बने पक्षियों के घोंसले नीचे गिरने लगे। वहाँ पक्षियों की चीखें सुनाई देने लगीं। हाथी ने यहीं बस नहीं की, उसने पेड़ को अपनी पीठ पर टिकाया और यहाँ-वहाँ घूमने लगा। यह देखकर चिड़िया ने दुख के मारे अपनी आँखें बंद कर लीं।

पर वहाँ एक आदमी भी था। आदमी ने अपनी आँखें बंद नहीं की थीं। वह हाथी की ताकत देखकर पहले तो हैरान हुआ। फिर उसकी ताकत का उपयोग सोचकर प्रसन्न हो गया। अब आदमी ने और भी कई हाथियों को **वश** में किया और उन्हें सामान ढोने के काम पर लगा दिया। सभी हाथी उस पहले हाथी पर नाराज़ होने लगे। पहला हाथी बोला–"मुझे भी इसका **अफ़सोस** है।"

—गोविंद शर्मा

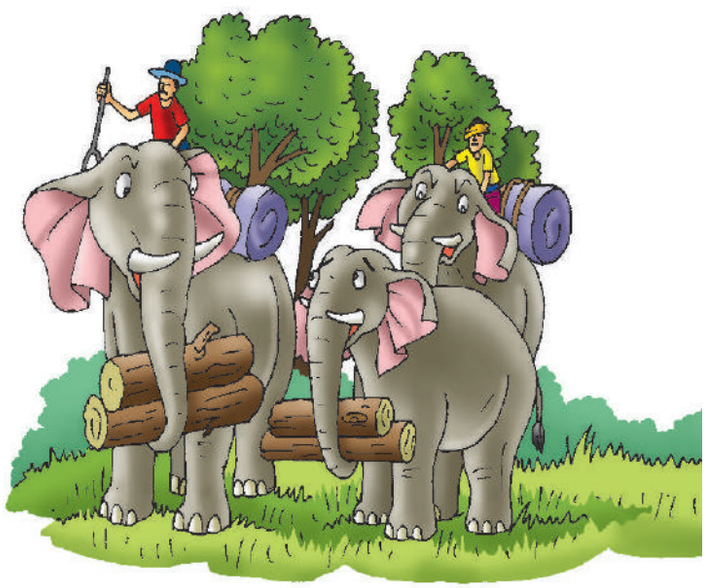

शब्दार्थ: वश-काबू में रखना, **अफ़सोस**-दुख, पछतावा